SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

SESSION - 20-22

COURSE NAME - B.Ed. 2nd YEAR

SUBJECT - C-10 (Creating an Inclusive school)

TOPIC NAME - समावेशी शिक्षा का अर्थ, परिभाषा

DATE - 29.01.22

⇒ समावेशी शिक्षा का अर्थ एवं परिभाषा :-

समावेशी शिक्षा वह शिक्षा होती है, जिसके द्वारा विशिष्ट क्षमता वाले बालक जैसे मन्दबुद्धि, अंधे बालक, बहरे बालक तथा प्रतिभाशाली बालकों को ज्ञान प्रदान किया जाता है।

समावेशी शिक्षा के द्वारा सर्वप्रथम छात्रों के बौद्धिक स्तर की जाँच की जाती है तथा बाद में उन्हें दी जाने वाली शिक्षा का स्तर निर्धारित किया जाता है। अतः यह एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जो कि विशिष्ट क्षमता वाले बालकों हेतु ही निर्धारित की जाती है। इसलिए इसे समावेशी शिक्षा का नाम दिया गया है।

⇒ स्टीफन तथा हलैकहर्ट के अनुसार :- "शिक्षा की मुख्य धारा का अर्थ बाधित (पूर्ण रूप से अपंग नहीं) बालकों की सामान्य कक्षाओं में शिक्षण व्यवस्था करना है।"

⇒ थरमोंल के अनुसार :- "समावेशी शिक्षा के कुछ कारण योग्यता, लिंग जाति, भाषा, विकलांगता, लिंग व्यवहार या धर्म से संबंधित होते हैं।"

⇒ विद्वानशास्त्री के अनुसार :- "समावेशी शिक्षा को एक आधुनिक सोच की तरह परिभाषित किया जा सकता है, जो कि शिक्षा को अपने में लिये हुए दृष्टिकोण से मुक्त करती है और ऊपर उठने के लिए प्रोत्साहित करती है।

⇒ समावेशी शिक्षा की विशेषताएं :

समावेशी शिक्षा की विशेषताएं निम्नलिखित है –

1. समावेशी शिक्षा ऐसी शिक्षा है जिसके अन्तर्गत शारीरिक रूप से बाधित बालक तथा सामान्य बालक साथ-साथ सामान्य कक्षा में शिक्षा ग्रहण करते है।

2. समावेशी शिक्षा विशिष्ट शिक्षा का विकल्प नहीं है। समावेशी शिक्षा तो विशिष्ट शिक्षा का पूरक है। कभी-कभी बहुत कम शारीरिक रूप से बाधित बालको को सामावेशी संस्था में प्रवेश कराया जा सकता है।

3. इस शिक्षा का ऐसा प्रारूप दिया गया है जिससे अपंग बालक को समान शिक्षा के अवसर प्राप्त हो तथा वे समाज में अन्य लोगो की भाँति आत्मनिर्भर हो का अपना जीवन यापन कर सकें।

4. यह अपंग बालकों को अधिक प्रभावी वातावरण उपलब्ध कराती है। जिससे वे सामान्य बालकों के समान जीवनयापन कर सकें।

5. यह समाज में एक-दूसरे के मध्य दूरी को कम करती है तथा आपसी सहयोग की भावना को प्रदान करती है।

6. यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसके अन्तर्गत शारीरिक रूप से अक्षम बालक भी सामान्य बालकों के समान महत्वपूर्ण समझे जाते हैं।

⇒ समन्वयी शिक्षा के उद्देश्य :-

1. शारीरिक दोषयुक्त विभिन्न बालकों की विशेष आवश्यकताओं की सर्वप्रथम पहचान करना तथा निर्धारण करना।

2. शारीरिक रूप से अपंग बालकों का पुनर्वास कराया जाना।

3. शारीरिक रूप से अपंग बालकों की शिक्षण समस्याओं की जानकारी प्रदान कराना।

4. बालकों की असमर्थताओं का पता लगाकर उनको दूर करने का प्रयास करना।

5. शारीरिक दोष की दशा को बढ़ने से पहले कि वे गम्भीर स्थिति को प्राप्त हो, उनके रोकथाम के लिए सर्वप्रथम उपाय किया जाना।

⇒ समावेशी शिक्षा की आवश्यकताएँ :

▫ समावेशी शिक्षा की आवश्यकता निम्न प्रकार से है–

(i) सामान्य मानसिक विकास संभव है– अपंग बालक अपने आपको दूसरे बालकों की अपेक्षा तुच्छ तथा हीन समझते है जिसके कारण उनके साथ पृथकता से व्यवहार किया जा रहा है। समावेशी शिक्षा व्यवस्था में अपंगों को सामान्य बालकों के साथ मानसिक रूप से प्रगति करने का अवसर प्रदान किया जाता है।

~~२. समावेशी शिक्षा कम खर्चीली है।~~

2. सामाजिक एकीकरण को सुनिश्चित करती है– अपंग बालक अधिक संख्या में सामान्य बालकों का संग पाते है तथा एकीकरणता के कारण वे सामाजिक गुणों को अन्य बालकों के साथ ग्रहण करते है। उनमें सामाजिक, नैतिक गुण, प्रेम, सहानुभूति, आपसी सहयोग आदि गुणों का विकास होता है।

3. समावेशी शिक्षा के माध्यम से एकीकरण संभव है– समावेशी शिक्षण व्यवस्था में सामाजिक विचार-विमर्श अधिक किये जाते है अर्थात् (उन्मूलन अधिक है।) अपंग तथा सामान्य बालक में सामान्य शिक्षा के अन्तर्गत एक प्राकृतिक वातावरण बनाया जाता है। यह वातावरण में अपने सहपाठियों से सीखना, स्वीकार करना तथा स्वयं को दूसरों से स्वीकार कराया जाना समावेशी शिक्षा द्वारा संभव है।

4. शैक्षिक एकीकरण संभव है - शैक्षिक योग्यता सामान्यता समावेशी शिक्षा के वातावरण द्वारा सम्भव है। शिक्षाविदों का विश्वास है कि सामान्य विद्यालयों में बाधित छात्रों को प्रवेश दिलाने के कारण वह ठीक प्रकार से शिक्षा ग्रहण करने में असमर्थ होते है। एक प्रकार से कहा जा सकता है कि लचीले वातावरण तथा आधुनिक पाठ्यक्रम के साथ समावेशी शिक्षा शैक्षिक एकीकरण लाती है।

5. समानता के सिद्धान्त का अनुपालन करना है - भारत में, शारीरिक रूप से बाधित बालकों के लिये शिक्षा को व्यापक रूप देना भी संविधान के अन्तर्गत दिया गया है। समावेशी शिक्षा के वातावरण के माध्यम से समानता के उद्देश्य की भी प्राप्ति की जानी चाहिये, जिससे कोई भी छात्र अपने आपको दूसरों की अपेक्षा हीन न समझे।